स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

समीना नायकवडी (कुरेशी)

डॉ. पतंगराव कदम आर्ट्स एंड कॉमर्स

कॉलेज, पेण, रायगढ़, महाराष्ट्र

Mob-7058051292,

ई मेल — saminanaikawdi@gmail.com

शोध सारांश–

भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता आन्दोलन एक युगान्तकारी घटना है । यह विशाल देश लगभग सन् 1757 से 1947 तक परतंत्र रहा । भारत में ब्रिटिश शासन अठ्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक स्थापित हो चुका था किन्तु अंग्रेजों की दुर्नीति और दमनचक्र ने एक नया जागृत राष्ट्रवाद उत्पन्न किया । उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में देश में पुनरुत्थान और राजनैतिक चेतना की लहर फैल गयी । तत्कालीन हिन्दी कवियों ने भी देश की दासता और करुण दशा से प्रभावित होकर जन जागरण में अपना सक्रिय योगदान किया । उनका हृदय भारत माँ को दासता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए उद्वेलित हो उठा । देशवासियों को अतीत के स्वर्णिम वैभव और सांस्कृतिक परम्परा से परिचित कराने का दायित्व निर्वहन तो इन कवियों ने किया ही साथ ही साथ उनमें देशनिष्ठा एवं अस्मिता भी जागृत की । कवियों देश की दुर्दशा पर भी क्षोभ प्रकट कर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष के लिए जनमानस को प्रेरित किया तथा क्रांति की समुचित पृष्ठभूमि तैयार की । उन्होंने अंग्रेजों की कपटनीति और साम्राज्यवाद का विरोध करते हुए, देशवासियों को आत्मसम्मान के साथ जीने का संदेश दिया । इसके साथ ही साथ बहुत से हिंदी रचनाकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय होने के कारण बहुत से हिंदी रचनाकारों ने विविध पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अपने राष्ट्रवादी विचार जनता तक पहुँचाए हैं । स्वत्रंता आंदोलन में भी नेताओं ने ज्यादा से ज्यादा भारतीय जनता का आंदोलन में सहभाग हो अतः सब एक मिलकर अंग्रेजो के खिलाफ लड़े जिसमें हिंदी ने अहम भूमिका निभाई ।

बीज शब्द – भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, राजनैतिक चेतना, देशनिष्ठा, हिंदी समर्थन ।

उद्देश – हिंदी साहित्य, हिंदी साहित्यिक पत्र–पत्रिका और स्वतंत्रता आंदोलन के राजकीय नेताओं का हिंदी समर्थन आदि दृष्टिकोण से हिंदी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान कैसे रहा यह स्पष्ट करना ।

प्रस्तावना –

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा– ज्ञान के,मिटत न हिय को सूल ।।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार ।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ।।

– भारतेंद्र हरिश्चंद्र

कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र कहते हैं कि सभी प्रकार की प्रगति का आधार अपनी मातृभाषा का विकास करना है । मातृभाषा ज्ञान के बिना हृदय का दुख दूर नहीं हो सकता । भारत में कुल 28 राज्य हैं और उन सबकी अपनी भाषा है कुल मिलाकर भारत में 121 भाषाएं बोली जाती हैं किंतु देश की मातृभाषा हिंदी है । हिंदी ने आज राष्ट्रभाषा, राजभाषा का स्थान प्राप्त किया है किन्तु वह सबसे

पहले हम सब हिंदुस्तानियों की सामान्य भाषा है। भले ही भारत में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हो फिर भी भारतीय समाज में शिक्षित और अशिक्षित जनता को आसानी से हिंदी का प्रयोग करते हुए हम देखते हैं। हिंदी की अपनी एक विकास यात्रा है। उसके साहित्य की आपनी सांस्कृतिक विरासत है। इसी हिंदी ने ही सब को एकसूत्र में बाँध रखा है। स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में हिंदी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई भारतीय जनमानस में राष्ट्रवाद जागृत कर साहित्य, पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी ने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन को गति दी। हिंदी के कितने ही एसे रचनाकार हैं जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सहभागी हो हिंदी साहित्य के माध्यम से राष्ट्रवाद जागृत कर देशभक्ति, देशप्रेम बढ़ाया है। स्वतंत्रता आंदोलन के कुछ सेनानी हिंदी के प्रबल समर्थक और प्रचारक थे। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिंदी का परिमार्जन कर हिंदी को आगे बढ़ाया तो स्वतंत्रता आंदोलन के जनक बालगंगाधर तिलक ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका के भाषण में कहा था कि, "राष्ट्रभाषा मैं ऐसे राष्ट्रीय आंदोलन की बात कर सकता हूँ, जिससे सारा भारत एक सामान्य भाषा या राष्ट्रभाषा अपना सके एक भाषा राष्ट्रीयता का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। आप एक सामान्य भाषा के माध्यम से अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। यदि आप राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधना चाहते हैं तो सबके लिए एक सामान्य भाषा से अधिक प्रबल शक्ति कोई और नहीं हो सकती।"

इस तरह हिंदी ने स्वतंत्रता युगीन चेतना को सशक्त तरीके से लोगों तक पहुंचा कर भारतीय राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया है तथा भारतीय जनमानस में देशप्रेम जगाया।

हिंदी साहित्य द्वारा हिंदी का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान

भारतेन्दु युग के कवियों ने जहाँ एक ओर भारतीय इतिहास के गौरवशाली पृष्ठों का स्मरण दिला कर देशप्रेम का नया स्वर फूँका, वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों की न्यायप्रियता, संगठन–शक्ति, प्रजातंत्र में आस्था, उच्चशिक्षा आदि की भी प्रशंसा की किन्तु उन्होंने अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का विरोध किया। देश के उद्योग–धन्धों की अवनति, आर्थिक शोषण, करों के बोझ से निरन्तर दबी जा रही जनता के दुख–दर्द का भी इन कवियों ने अनुभव किया। ये कवि क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर राष्ट्र के नवजागरण के गीत गाने लगे। राधा चरण गोस्वामी, प्रेमधन, श्रीधर पाठक, राम देवी प्रसाद पूर्ण आदि कवियों ने देश के उत्कर्षाकर्ष के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डालकर भारतेन्दु युगीन कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भाव का बीजारोपण किया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, बाल मुकुंद गुप्त, अम्बिका दत्त व्यास आदि की कवितायें इसी परम्परा में लिखी गयी हैं। जैसे .

"बड़े बड़े बीरन के वंशज, बनि बैठे सब गोरी।
नाचि रिझावत परदेसिन को,लाज नहीं तनको री।
जु ले लहँगौ कोउ छोरी॥"

होलिकापंचक – प्रतापनारायण मिश्र

भारतेंदु युगीन गद्य साहित्य की विशेषताओं में सबसे अधिक प्रमुख विशेषता राष्ट्रप्रेम का भाव जागृती है। जिसे तत्कालीन साहित्यकारों ने हास्य व्यंग के माध्यम से व्यक्त किया है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के परिणामस्वरुप भारतवासियों में सोई हुई आत्मशक्ति के जागरण के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के प्रति लालसा बढ़ी, जिससे उनमें राष्ट्रीयता के भाव का उदय होना स्वाभाविक था। इसका प्रभाव इस युग की रचनाओं पर भी पड़ा। इस युग के रचनाकारों की रचनाओं में देशभक्ति का स्वर विशेष रूप से गुंजायमान रहा। उदाहरण– भारत दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सन 1875 ई. में रचित एक हिन्दी नाटक। इसमें भारतेन्दु ने प्रतीकों के माध्यम से भारत की तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया है। वे भारतवासियों से भारत की दुर्दशा पर रोने और फिर इस दुर्दशा का अन्त करने का प्रयास करने का आह्वान करते हैं। भारतेन्दु का यह नाटक अपनी युगीन समस्याओं को उजागर करता

है तथा साथ ही साथ उसका समाधान करता है। भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वर्तमान लक्ष्यहीन पतन की ओर उन्मुख भारत का वर्णन किया है। जैसे–

"तीन नासी बुद्धि बल विद्या, धन बहू बारी।
छाई अब आलस – कुमति – कलह – अंधियारी ।।
भय अंध पंगु सब दीन– हीन बिखलाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा ना देखी जाई।।

– भारत दुर्दशा–भारतेंदु हरिश्चन्द्र

द्विवेदी युग में खड़ी बोली हिंदी का प्रचलन और प्रतिष्ठापन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा किया गया। राष्ट्रीयता द्विवेदी युगीन काव्य की प्रधान भावधारा थी। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने देशभक्तिपूर्ण कविताओं का सृजन किया। उन्होंने परतंत्रता की निद्रा में सुप्त भारतीयों को जाग्रत करने का प्रयास किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में इस युग का विशेष महत्त्व है। भारतीय गौरव और सम्मान से जुड़े अनेक आन्दोलनों का प्रभाव इस युग में रहा। गांधी जी के आगमन से देश में नयी शक्ति संचरित हुई तथा राष्ट्रीयता की लहर पूरे देश में फैल गयी। कवियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति का आह्वान किया। उन्होंने गौरवपूर्ण अतीत के चित्रण के साथ ही वर्तमान की दुर्व्यवस्था का भी वर्णन किया है। इन कवियों ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों, निर्धनता, स्वदेशी भावना, असहयोग स्वातंत्र्य आन्दोलन आदि सभी को अपना काव्य विषय बनाकर सशक्त अभिव्यक्ति दी। आ.महावीर प्रसाद द्विवेदी, नाथूराम शंकर, मन्नत द्विवेदी, रामचरित उपाध्याय, रूप नारायाण पाण्डेय, लोचन प्रसाद पाण्डेय, गया प्रसाद शुक्ल 'स्नेही', रामनरेश त्रिपाठी, माधव शुक्ल, सत्यनारायण कविरत्न आदि की रचनाओं में राष्ट्रीय जागृति और क्रांति के चित्र मिलते हैं। लोक कवियों ने कांग्रेस, महात्मा गांधी, असहयोग आन्दोलन, चर्खा, स्वराज आदि से सम्बन्धित लोकगीतों की रचना कर हिंदी के माध्यम से देशप्रेम और स्वातंत्र्य चेतना जगाने की चेष्टा की है। जैसे–

"चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर।"

– युगावतार– गांधी, सोहनलाल द्विवेदी

छायावाद की राष्ट्रीय चेतना अपने अंतिम स्तर पर केवल राष्ट्र तक सीमित नहीं रहती बल्कि संपूर्ण मानवता के स्तर पर सक्रिय हो जाती है। यह भारतीय चिंतन सृष्टि की वही धारणा है जिसमें राष्ट्रीय हितों व वैश्विक हितों को परस्पर विपरीत नहीं बल्कि सुसंगत शक्तियों के रूप में विश्व कुटुंबकम का व्याख्यान किया जाता है। स्वाधीनता के संघर्ष में नए विकल्प के तौर पर निराला सुझाते हैं। जैसे–

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन,
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो रघुनंदन।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्तए,
तो निश्चित तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त ।।"

– राम की शक्तिपूजा – निराला

संक्षेप में यह स्पष्ट है कि हिंदी साहित्य जगत के रचनाकारों ने हिंदी के माध्यम से राष्ट्रवाद की अवधारणा निर्माण से लेकर उसके विकास तक हिंदी के साहित्यिक विधा के माध्यम से अहम योगदान दिया ।

हिंदी पत्र–पत्रिका के माध्यम से हिंदी का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान –

राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक विकास के परिणामस्वरूप जो राष्ट्रवाद उदित हुआ, उसे पत्रकार, बुद्धिजीवी, राष्ट्रवादी लोग विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अंग्रेजी शासन के दमन और पोषण के विरूद्ध लिखते रहे और जनता को जागरूक करके नवोत्थान के लिए मार्ग प्रशस्त किया । हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के पत्रकार अपनी राष्ट्रवादी भावनाओं और विचारों के लिए प्रख्यात रहे हैं । स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता साथ.साथ चलने लगे तत्कालीन परिस्थिति में रचनाकार एक साथ साहित्यकार और पत्रकार दोनों हुआ करते थे ।

पत्रकारिता के संबंध में कहा गया है कि वह शीघ्रता में लिखा गया साहित्य है और साहित्य प्रतीक, बिम्ब और अप्रस्तुत कथन के द्वारा अपना प्रतिपाद्य अभिव्यक्त करता है । साहित्य को समझने वाले लोगों का एक खास वर्ग होता है । किन्तु पत्रकारिता जनता की भाषा में जनता की बात करती है । संभवतः यहीं कारण है कि स्वतंत्रता अवधि के सभी रचनाकारों ने अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में साहित्य और पत्रकारिता दोनों को चुना जिस प्रकार देश के स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रनायकों का अप्रतिम योगदान रहा, उसी प्रकार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से भी लोगों में राष्ट्रीयता की भावना को जगाया गया राष्ट्रीयता की वह धारा जिसका विकास राजनीति के माध्यम से हो रहा था पत्रकारिता की शक्ति से संपन्न थी ।

हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का प्रथम चरण –

1826 ई. में उदंत मार्तंड के प्रकाशन से लेकर 1873 ई. में भारतेन्दु के हरिश्चन्द्र मैगजीन तक को हिंदी पत्र पत्रिकाओं का प्रथम चरण माना जाता है । हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभिक काल के हिन्दी पत्र निम्नांकित रहे हैं । जुगलकिशोर शुक्ल का उदंत मार्तण्ड, 1826 में नील रतन हालदार का बंगदूत, 1829 में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द का बनारस अखबार, 1845 में प्रेमनारायण का मालवा अखबार, 1848 में तारामोहन मित्र का सुधाकर, 1850 में मुंशी सदा सुखलाल का बुद्धि प्रकाश, 1852 में मुंशी लक्ष्मण दास का ग्वालियर गजट, 1853 में श्यामसुंदर का समाचार सुधावर्ष, 1854 राजा लक्ष्मण सिंह का प्रजाहितैषी, 1855 बाबू श्रीलाल का जियाजी प्रताप, 1855 शिवनारायण का सर्वहितकारक, 1855 ग्रंथसभा का बुद्धिवर्धक ग्रंथ, 1856 कन्हैयालाल का राजपूताना अखबार, 1857 अजी मुल्ला का पयामें आजादी, 1857 नवीनचन्द्र राय का ज्ञानप्रदायिनी पत्रिका, 1866 तत्वबोधिनी पत्रिका आदि पत्र राष्ट्रीयता की भावना से भरे हुए थे । इन पत्रों में समाजसुधार, राष्ट्रीयता, क्रांति की भावना एवं विदेशी शासन के विरूद्ध बगावत का स्वर है । जैसे–

"भारतेन्दु ने पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य की अनेक नवीन विचाओं को विकसित कर उनके माध्यम से स्वतंत्रता की भावना को विकसित किया । उनके पत्रों से राष्ट्रीय विचारधारा प्रस्फुटित हुई ।"

भारतेन्दु के पत्रों के अतिरिक्त पं. बालकृष्ण भट्ट का हिन्दी प्रदीप, पं. प्रताप नारायण मिश्र का ब्राह्मण, प्रेमधन का आनंद कादंबिनी और नागरी नीरद, पं. गौरी दत्त का देवनागरी प्रचारक, ठाकुर हनुमंत सिंह का राजपूत, रूद्रदत्त शर्मा द्वारा संपादित भारत मित्र, बालमुकुन्द गुप्त का हिन्दी बंगवासी, श्री तोताराम जी का भारत बन्धु, गोपाल राम गहवरी का भारत भूषण, पंडित मोहनलाल द्वारा संपादित मोहन चंद्रिका आदि इस युग के प्रमुख पत्रकार एवं पत्र–पत्रिकाएं थी । इनमें से अधिकांश संपादक एवं लेखक भारतेन्दु मण्डल के थे । इन सभी का मूल उद्देश्य स्वदेशप्रेम, भाषा एवं संस्कृति के प्रति अनन्य श्रद्धा, राष्ट्रप्रेम, हिन्दी भाषा का प्रचार आदि था ।

हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का द्वितीय चरण –

1900 ई. से 1920 ई. तक का युग द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है। विचारक और साहित्य नेता आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस काल का नाम द्विवेदी युग पड़ा। 1900 में प्रकाशित सरस्वती के माध्यम से पं.महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यिक पत्रकारिता की परंपरा को समृद्ध और परिष्कृत किया। सरस्वती पत्रिका में देशप्रेम विषयक कविता का प्रकाशन अनवरत जारी रही। पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी की जन्मभूमि भारतभूमिश, आर्यभूमि प्यारा वतन, रूपनारायण पांडेय की मातृभूमि, लक्ष्मण सिंह की जन्मभूमि पूजन, रामनरेश त्रिपाठी की जन्मभूमि भारत रामचरित उपाध्याय की भव्यभारत आदि देश–प्रेम से ओत.प्रोत कविताएँ सरस्वती में लगातार प्रकाशित होती रही। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1903 से 1918 ई. तक लगातार सरस्वती का संपादन कर हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को नया आयाम दिया। यही कारण है कि पत्रकारिता के इस कालावधि को साहित्यिक पत्रकारिता का युग अथवा द्विवेदी युग कहा जाता है।

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी लिखते हैं, "द्विवेदी जी के सरस्वती संपादन का इतिहास ऐसे अनेक आंदोलनों का इतिहास है। जो उनके व्यक्तित्व और तत्कालीन समाज के विकास का इतिहास भी कहा जा सकता है।

द्विवेदी कालीन प्रमुख पत्र.पत्रिकाएँ निम्नांकित है– पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी के संपादकत्व में जयपुर से समालोचक पत्रिका, शांतिनारायाण का स्वराज्य पत्र, मदनमोहन मालवीय का अभ्युदय तिलक के केसरी का हिन्दी संस्करण, हिन्दी केसरी पं. सुंदरलाल का कर्मयोगी, कृष्णकांत मालवीय का मर्यादा, गणेश शंकर विद्यार्थी का प्रताप युवक और विशाल भारत युगांतर गदर वंदेमातरम्, प्रभा आदि इन पत्र– पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपना भरपूर योगदान दिया।

इन पत्रिकाओं पर गांधी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। अब पत्रकारिता की धारा राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में गतिमान राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन करने लगी। इस युग में गांधी जी ने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से जन–जागरण सत्याग्रह एवं अछूतोद्धार का कार्य प्रारंभ कर दिया। नवजीवन और हरिजन पत्र के माध्यम से गांधीजी ने तो एक नए युग और सामाजिक क्रांति का उद्घोष कर दिया था। गाँधी जी से प्रभावित होकर स्वराज की माँग को प्रखर स्वर देने हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुयी। जैसे– जबलपुर से कर्मवीर, आगरा से सुधाकर, लाहौर से ज्योतिश, सोहागपुर से हिन्दू, प्रयाग से हिंदुस्तानी अखबार, कलकत्ता से क्षत्रिय मार्तण्ड, काशी से अहिंसा, आज कानपुर से वर्तमान और लोकमत पटना से प्रजाबंधु तथा देश आदि पत्र– पत्रिकाएँ प्रकाशित हुयी।

स्वतंत्रता आंदोलन में राजकीय नेताओं का हिंदी समर्थन –

स्वतंत्रता संग्राम भी अनेक नेताओं के नेतृत्व में लड़ा गया। स्वतंत्रता के साथ–साथ हमारे राजनेताओं ने आत्माभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का आंदोलन भी छेड़ा। भारत के लोग अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी शिक्षा के विरुद्ध बोलने लगे। हिंदी सीखना और बोलना स्वतंत्रता आंदोलन का एक अंग बन गया। आजाद हिंद फौज में हिंदी का ही बोलबाला था। सुभाषचंद्र बोस भी हिंदी में ओजस्वी भाषण देते थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी, राजगोपालाचारी, महामना पं. मदन मोहन मालवीय, आचार्य नरेंद्र देव, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन आदि नेताओं ने हिंदी की अस्मिता को पहचाना और हिंदी के प्रचार– प्रसार में जुट गए। महात्मा गाँधी ने तो राष्ट्रभाषा हिंदी के आंदोलन को स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जोड़ दिया। उन्होंने स्वयं हिंदी सीखी और अन्य लोगों को भी हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। शुरू में महात्मा गांधी जी के विचार गुजराती में और अंग्रेजी में ही प्रकट होते देखकर श्री जमनालाल बजाज ने गुजराती नवजीवन की हिंदी आवृत्ति, संस्करण निकालने का आग्रह किया। महात्मा जी मान गये और उनके अंग्रेजी और गुजराती लेखों का अनुवाद हिन्दी में प्रकट होने लगा। जो काम हिंदी नवजीवन ने किया, वही आगे जाकर हरिजनसेवक द्वारा आखिर तक होता रहा। देशप्रेम और हिंदी भाषा के प्रति अपने विशेष प्रेम के कारण गांधी जी ने जहां तक हो

सका हिंदी बोलने का और पत्र लिखने का नियम चलाया। इन नेताओं ने सभी भारतीय जनता को एकत्रित लाने और स्वतंत्रता आंदोलन को और अधिक प्रबल बनाने हेतु हिंदी का समर्थन किया था। हिंदी समर्थन हेतू नेताओं के वक्तव्य कुछ इस प्रकार थे। जैसे

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने कहा था कि "मेरे लिए हिंदी की समस्या भारत की स्वतंत्रता की समस्या है। भाषा की समस्या राष्ट्र की समस्या से संबंधित होती है। भारत में अंग्रेजी भाषा की प्रधानता स्वीकार करना अंग्रेजी जीवन–सिद्धांत के सामने सिर झुकाना है। यह हमारी बौद्धिक दासता का सूचक है।"

गाँधीजी ने कहा था, "राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।"

निष्कर्ष –

इस प्रकार राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का संवर्धन और पोषण नहीं हो सकता। प्राचीन काल से ही हिंदी ने इसका पोषण किया है। वास्तव में हिंदी लोकभाषा है और उसकी शक्ति जनशक्ति है। इस देश की सामासिक संस्कृति को व्यक्त करने की क्षमता हिंदी में है। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान हिंदी न केवल पूरे देश को जोड़ने वाली राष्ट्रीय कड़ी बनी बल्कि वह अपने आप में आंदोलन का एक पवित्र लक्ष्य थी। हिंदी ने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाया और स्वतंत्रता आंदोलन में अपना योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ –

1. होलिकापंचक – प्रतापनारायण मिश्र
2. भारत दुर्दशा–भारतेंदु हरिश्चन्द्र
3. युगावतार– गांधी, सोहनलाल द्विवेदी
4. राम की शक्तिपूजा – निराला
5. नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी में भाषण दिसंबर 1905 लोकमान्य तिलक, हिज राइटिंग्स एंड स्पीचेज पृ. 2
6. हिमांशु शेखर सिंह,हिन्दी पत्रकारिता और काशी.पृ . 69
7. ओ. पी. शर्मा, पत्रकारिता और उसके विभिन्न स्वरूप, पृ.25
8. महिपाल सिंह एवं देवेंद्र मिश्र,विश्व बाजार में हिंदी, पृ.83

साहित्याकाश